आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ --------- Date:01-02-15

हम भाग्यशाली आत्माओं को जीवनमुक्ति का सहज रास्ता बताते हुए बापदादा ने कहा, सर्व बन्धनों से मुक्ति की युक्ति है त्रिकालदर्शी बनकर हर कर्म करना, कर्म करते समय साक्षी दृष्टा हो पार्ट बजाना और अनेक आत्माओं के आगे दृष्टान्त रुप बनना.

इस अमूल्य ब्राह्मण जीवन में सर्व बन्धनों से मुक्त, जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करने के लिए कहे गये महा-वाक्यों ---

- बापदादा अभी सभी बच्चों की विशेष धारणाओं को देख रहे थे. सुनना - यह तो जन्म-जन्मांतर करते ही आये है लेकिन इस अलौकिक ब्राह्मण जीवन की विशेषता है – धारणा स्वरूप बनना.

- बापदादा देख रहे थे कि हरेक ब्राह्मण बच्चा कर्म करने से पहले त्रिकालदर्शी की स्टेज पर स्थित हो तीनों कालों को जानने वाले बन कर्म के आदि-मध्य-अन्त को जान हर कर्म करते हैं. और फिर कर्म करते समय साक्षी दृष्टा हो कर पार्ट बजाते है. ऐसे पार्ट बजाने वाली आत्मायें ही वर्तमान समय और भविष्य में भी पूज्य स्वरूप बन अनेक आत्माओं के आगे दृष्टांत रुप बनते है. तो बापदादा चेक कर रहे थे बच्चों की तीन स्टेज, त्रिकालदर्शी, साक्षी दृष्टा और दृष्टांत स्वरूप कहाँ तक रहती है.

- हर कर्म त्रिकालदर्शी बन करने से कोई भी कर्म विकर्म नहीं हो सकता, सदा सुकर्म ही होगा. ऐसे ही साक्षी दृष्टा बन कर्म करने से कोई भी कर्म के बन्धन में कर्म-बन्धनी आत्मा नहीं बनेंगे. कर्म का फल श्रेष्ठ होने के कारण कर्म-सम्बन्ध में आयेंगे, बन्धन में नहीं. सदा कर्म करते हुए न्यारे और बाप के प्यारे अनुभव करेंगे. ऐसी न्यारी और प्यारी आत्मायें अभी भी अनेक आत्माओं के सामने दृष्टांत बनते है जिसको देखकर अन्य आत्मायें कर्मयोगी बन जाती है. ऐसी आत्मायें भविष्य में पूज्यनीय बन जाती हैं.

बापदादा ने देखा की ब्राह्मण आत्माओं में मुख्यत्वे दो बन्धन है - १. देह का बन्धन २. मन का बन्धन. दोनों बन्धनों को मुक्त करने के लिए बापदादा ने उच्चारण किये हुए महा-वाक्यों --

- बाप समान मुक्त आत्मा बनने की सहज साधन है - सर्व सम्बन्ध एक बाप के साथ जोड़ना अर्थात सर्व बन्धनों से मुक्त होना. अगर किसी भी प्रकार का बन्धन अनुभव करते हो तो वह सम्बन्ध बाप से नहीं जोडा है.

- स्व के देह के बन्धन का कारण है देही का सम्बन्ध बाप से नहीं जोडा हैं. बाप की स्मृति और देही स्वरूप के स्मृति की धारणा नहीं हुई हैं. सेकेण्ड में देह से न्यारे बनने का अभ्यास सेकेण्ड में देह के बन्धन से मुक्त बना देता हैं. जैसे साईन्स के साधनों द्वारा भी सेकेण्ड में वस्तु परिवर्तन हो जाती है वैसे साइलेन्स की शक्ति से, देही के सम्बन्ध से बन्धन खत्म. आत्मा का स्वधर्म है ही शांति, देही अर्थात आत्मिक स्वरूप (परमधाम में बिन्दी स्वरूप).

- दूसरे नम्बर का बन्धन है मन का बन्धन. इसका सहज साधन है मनमनाभव. सदा एक बाप दुसरा न कोई. यह है बच्चों का पहला वायदा, जिसे निभाने से स्वतः ही मन के बन्धनों से मुक्त हो जायेंगे. सदा सर्व आकर्षणों से परे एक की लगन में मगन, एक रस अवस्था, अचल-अडोल अवस्था बच्चों को बनानी हैं.

बापदादा से सर्व ब्राह्मण आत्माओं का बहुत स्नेह है. तो स्नेह का सबूत है बाप समान बनना. जिस स्टेज से बाप की स्नेह है, ऐसी स्टेज को पाना. सदा एक बाप की स्मृति स्वरूप बनना. इसके लिए सहज युक्ति है सदा अपने सम्पूर्ण स्वरूप को सामने रखो तो माया से कभी हार नहीं खायेंगे.

बापदादा ने बच्चों से कहा समय प्रमाण अपनी रिजल्ट को प्रैक्टिकल में लाने के लिए दो मुख्य धारणायें सदा याद रखो - १. मधुरता २. नम्रता. इन विशेष दो धारणाओं से सदा विश्व कल्याणकारी, महादानी वरदानी बन जायेंगे और सहज ही बाप से स्नेह का सबूत दे सकेंगे.

ॐ शांति.

Thank you for sending your Experiences/Feedbacks/Queries to Atma Bhai on a.brahmin.soul@gmail.com .